ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

हरियाणा में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता– एक प्रादेशिक विश्लेषण

Gender Asymmetry in Work Participation Rate in Haryana - A Regional Analysis

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

विजय प्रकाश
प्रवक्ता,
भूगोल विभाग,
श्री नेहरू स्मारक इण्टर कालेज, मैनपुरी,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत लघु शोध में हरियाणा में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता का कुल, ग्रामीण और नगरीय परिदृश्य में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध पत्र राज्य व जिले स्तर पर रोजगार में लैंगिक अन्तर को पकड़ने का प्रयास है जिससे यह पता चलता है कि राज्य की कार्य सहभागिता में महिलाएं काफी पीछे हैं। महिला कार्य सहभागिता ने राज्य में लिंग पूर्वाग्रह के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से दिखाया है। लिंग सम्बन्धी पूर्वाग्रहों ने महिलाओं को सभी क्षेत्रों में काफी नुकसान पहुँचाया है। यह बहुत चिन्ता की बात है कि रोजगार के साथ ही जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है। अर्थव्यवस्था में सेवाओं और संसाधनों पर पुरूषों का नियन्त्रण है। इस पुरूष प्रधान समाज में लगभग सभी संस्कृतियों में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव होता रहा है।

हरियाणा में कार्यबल की एक विशिष्ट विशेषता है– पुरूषों और महिलाओं की कार्य सहभागिता दर में व्यापक विषमता का अस्तित्व, जो कि एक चिन्ता का विषय है। इसलिए राज्य में कार्य सहभागिता में लैंगिक विषमता के लिए उत्तरदायी कारकों की पहचान करके उसको दूर करने के उपाय सुझाये गये हैं। इससे व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के विकास को गति मिल सकेगी।

In the small research presented, a comparative study of gender inequality in work participation rate in Haryana is done in total, rural and urban scenario. The research paper is an attempt to capture the gender gap in employment at the state and district level, which shows that women are far behind in the state's work participation. Women's work participation has clearly shown the existence of gender bias in the state. Gender bias has caused significant harm to women in all fields. It is a matter of great concern that along with employment, women are facing discrimination in all walks of life. Men have control over services and resources in the economy. Women have been discriminated against in almost all cultures in this male dominated society.

A distinctive feature of the workforce in Haryana is the existence of wide disparity in the work participation rate of men and women, which is a matter of concern. Therefore, by identifying the factors responsible for gender inequality in work participation in the state, measures have been suggested to overcome it. This will speed up the development of the individual, society and nation.

मुख्य शब्द : कार्य सहभागिता दर, पुरूष, महिला, लैंगिक विषमता, ग्रामीण, नगरीय, समाजीकरण आदि।

Work Participation Rates For Men, Women, Gender Inequalities, Rural, Urban, Socialization Etc.

प्रस्तावना

व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है जो किसी भी देश काल के अनुसार या देश काल के संदर्भ में परिवर्तनशील होता है तथा साथ ही यह मानव जीवन के आर्थिक आय का स्रोत एवं सामाजिक स्थिति का निर्धारण करने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है। आर्थिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या को कार्य शक्ति कहते हैं और कुल जनसंख्या का जितना प्रतिशत आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होता है उसे कार्य सहभागिता दर कहा जाता है।

वर्तमान में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता संबंधी अध्ययन एक अंतरराष्ट्रीय विषय हो गया है क्योंकि वैश्वीकरण एवं उदारीकरण से विश्व का आकार छोटा होता जा रहा है। लैंगिक विषमता से तात्पर्य लिंग के आधार पर महिला व पुरूष के बीच भेदभाव से है। जहाँ आज देश व प्रदेश आधुनिकीकरण, आर्थिक व राजनीतिक विकास एवं शिक्षा के पथ पर अग्रसर है वहीं लैंगिक विषमता की स्थिति गंभीर बनी हुई है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हरियाणा राज्य में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता ज्ञात करना तथा उसको प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकीय कारकों की व्याख्या करना है।

आंकड़ें एवं विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए भारतीय जनगणना (2011–कुल, ग्रामीण व नगरीय) विभाग द्वारा प्राप्त हरियाणा राज्य के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। हरियाणा की कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमताओं के गहन विश्लेषण हेतु जनपद की संख्या (21) पर्याप्त है। जनगणना के अधिकांश आंकड़े सी.डी. व इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसलिए आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर का सहारा लिया गया है। आंकड़ों के सम्यक विश्लेषण के बाद उपयुक्त मानचित्रात्मक और कार्टोग्राफिक विधियों का प्रयोग किया गया है। सरलीकृत आंकड़ों को छायांकन विधि द्वारा प्रदर्शित करने से अनेक छिपी सच्चाईयां उभरकर सामने आ गयी हैं। मानचित्रांकन द्वारा अनेक जटिलताओं का सरलीकरण हो गया है।

प्रमुख परिकल्पनाएँ

किसी शोध आयोजना को मूर्तरूप देने के लिए कुछ परिकल्पनाओं की अनिवार्यता समीचीन होती है। प्रस्तुत कार्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण परिकल्पनाएं इस प्रकार होंगी–

1. हरियाणा में लिंगानुपात देश के अन्य राज्यों की तुलना में सबसे कम पाया जाता है।
2. हरियाणा में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक दृष्टि से विषमताएं अधिक हैं।
3. औद्योगिक एवं नगरीकरण के प्रभाव वाले क्षेत्रों में लैंगिक विषमता में अधिक बढ़ोतरी हुई है।
4. महिला साक्षरता एवं आर्थिक कार्यों में महिलाओं की सहभागिता में धनात्मक संबंध है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में हरियाणा राज्य को अध्ययन का क्षेत्र चुना गया है क्योंकि हरियाणा राज्य का लिंगानुपात देश के सभी राज्यों से कम है। हरियाणा राज्य 01 नवंबर 1966 को उस समय अस्तित्व में आया जब पंजाब राज्य का विभाजन भाषा के आधार पर किया गया। जनगणना 2011 के अनुसार हरियाणा जनसंख्या की दृष्टि से 18वां एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से 21वां बड़ा प्रदेश है। इसका विस्तार $27^0 29'$ से $30^0 55'$उत्तरी अक्षांश एवं $74^0 27'$ से $77^0 37'$ पूर्वी देशांतर के मध्य 44222 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर है। 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 2,53,51,462 है जिसमें 1,34,94,734 पुरुष एवं 1,18,56,728 महिलाएं हैं। इस राज्य का लिंगानुपात 879 एवं जनसंख्या घनत्व 573 वर्ग किलोमीटर है। गत दशक (2001–2011) में राज्य की जनसंख्या में 19.90 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है।

राज्य की 74.80 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में एवं 25.20 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। राज्य की कुल जनसंख्या में 20.20 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति की है। राज्य में 75.60 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है जिनमें पुरुषों एवं महिलाओं का अनुपात क्रमशः 84.10 प्रतिशत, 65.90 प्रतिशत है। हरियाणा राज्य देश के सर्वाधिक समुन्नत राज्यों में से एक है।

कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता

लिंग–भेद का भूगोल, भूगोल की एक नवीनतम शाखा है जिसमें स्त्री–पुरुष विषमता के आयामों को रेखांकित किया गया है। लैंगिक विषमता ज्ञात करने के लिए पुरुषों की कार्य सहभागिता दर में से महिलाओं की कार्य सहभागिता दर को घटाया गया है। प्राप्त धनात्मक परिणाम पुरुषों की एवं ऋणात्मक परिणाम महिलाओं की कार्य सहभागिता दर में अधिकता का बोध कराती है।

तालिका 1.0
भारत एवं हरियाणा में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता (प्रतिशत में), 2011

भारत/हरियाणा	कुल	ग्रामीण	नगरीय
भारत	37.76	30.08	57.88
हरियाणा	52.68	46.34	65.74

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनगणना 2011 के अनुसार हरियाणा की कुल कार्य सहभागिता दर में 52.68 प्रतिशत की लैंगिक विषमता पायी जाती है। अर्थात् हरियाणा की कुल कार्य सहभागिता दर में पुरुषों का अनुपात महिलाओं की अपेक्षा 52.68 प्रतिशत अधिक है जबकि भारत की कुल कार्य सहभागिता दर में मात्र 37.76 प्रतिशत की लैंगिक विषमता पायी जाती है। इस प्रकार हरियाणा की कुल कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता राष्ट्रीय औसत से 14.92 प्रतिशत अधिक है।

कुल कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

कुल कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता हरियाणा के विभिन्न जिलों में एक समान न होकर अलग–अलग पाया जाता है जिसका अध्ययन तालिका 2.0 एवं मानचित्र 1.0 में 5 वर्गों के अन्तर्गत किया गया है–

1. अत्यधिक लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (70.00 प्रतिशत से अधिक)

तालिका 2.0 को देखने से स्पष्ट होता है कि इस वर्ग के अन्तर्गत हरियाणा राज्य के केवल 02 जिले सम्मिलित हैं– यमुनानगर (75.45 प्रतिशत) और अम्बाला (72.04 प्रतिशत)। ये दोनों जिले राज्य के उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र से सम्बन्धित हैं।

तालिका 2.0
हरियाणा में कुल कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

क्रमांक	लैंगिक विषमता (प्रतिशत में)	जिलों की संख्या
1	> 70.00	02

2	60.10–70.00	01
3	50.10–60.00	10
4	40.10–50.00	05
5	< 40.10	03

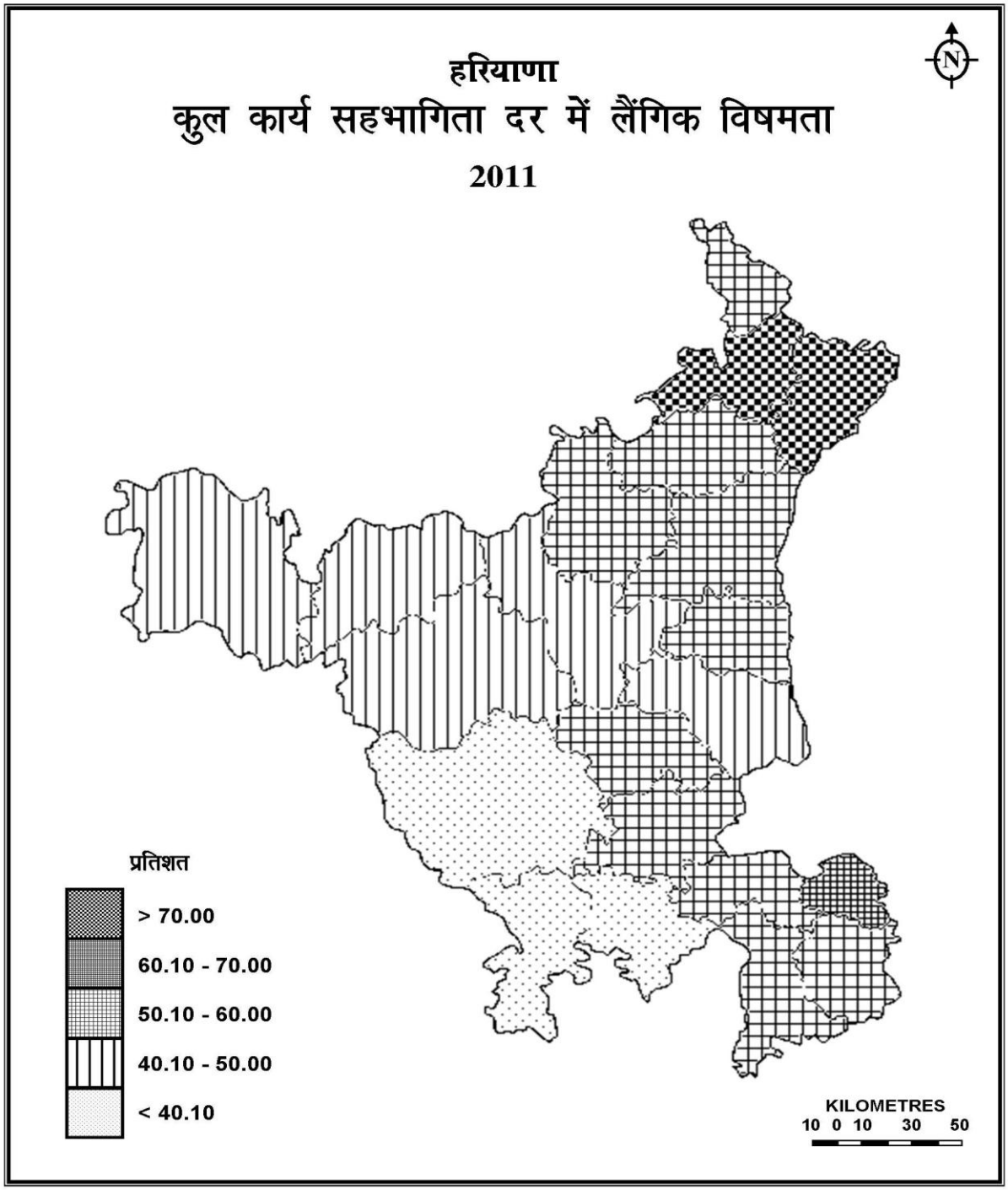

मानचित्र : 1.0

2. अधिक लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (61.10 से 70.00 प्रतिशत)–

इस वर्ग के अन्तर्गत हरियाणा का केवल फरीदाबाद (64.68 प्रतिशत) जिला आता है। फरीदाबाद हरियाणा के दक्षिणी–पूर्वी भाग में स्थित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से शामिल है।

3. मध्यम लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (50.10 से 60.00 प्रतिशत)

हरियाणा के जिन जिलों में कार्य सहभागिता दर में 50.10 से 60.00 प्रतिशत के मध्य लैंगिक विषमता पायी गयी है उन्हें इस वर्ग के अन्तर्गत रखा गया है। इसमें राज्य के पूर्व में 3 जिले करनाल (59.54 प्रतिशत), पानीपत

(59.42 प्रतिशत), एवं झज्जर (53.14 प्रतिशत); उत्तर–पूर्व में 2 जिलें कुरूक्षेत्र (59.48 प्रतिशत) एवं पंचकुला (55.92 प्रतिशत); उत्तर में 01 जिला कैथल (56.56 प्रतिशत); दक्षिण–पूर्व में 3 जिले गुड़गांव (58.78 प्रतिशत), पलवल (56.00 प्रतिशत) एवं मेवात (54.94 प्रतिशत) तथा मध्य–पूर्व में 01 जिला रोहतक (57.62 प्रतिशत) सम्मिलित है।

4. अल्प लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (40.10 से 50.00 प्रतिशत)

हरियाणा के 5 जिले इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं जिनमें राज्य के पूर्व में 01 जिला सोनीपत (59.50 प्रतिशत); उत्तर में 01 जिला फतेहाबाद (42.78 प्रतिशत); उत्तर–पश्चिम में 01 जिला सिरसा (47.20 प्रतिशत); पश्चिम में 01 जिला हिसार (41.22 प्रतिशत) तथा उत्तर–मध्य में 01 जिला जीन्द (40.72 प्रतिशत) शामिल है।

5. अत्यल्प लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (40.10 प्रतिशत से कम)

इस वर्ग के अन्तर्गत राज्य के केवल 3 जिले आते हैं जिसमें राज्य के दक्षिण में 01 जिला रेवारी (39.36 प्रतिशत); पश्चिम में 01 जिला भिवानी (38.26 प्रतिशत) एवं दक्षिण–पश्चिम में 01 जिला महेन्द्रगढ़ (37.60 प्रतिशत) आता है।

इस प्रकार हरियाणा राज्य में कुल कार्य सहभागिता दर में सर्वाधिक लैंगिक विषमता यमुनानगर जिले में एवं न्यूनतम लैंगिक विषमता महेन्द्रगढ़ जिले में पायी गयी है।

ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

हरियाणा में जिस प्रकार कुल कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता पायी गयी है उसी प्रकार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में भी लैंगिक विषमता देखने को मिलती है। जनगणना 2011 के अनुसार हरियाणा में ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में 46.34 प्रतिशत की लैंगिक विषमता है। अर्थात् हरियाणा की ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में पुरुषों का अनुपात महिलाओं की अपेक्षा 46.34 प्रतिशत अधिक है जबकि भारत की ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में मात्र 30. 08 प्रतिशत की ही लैंगिक विषमता पायी जाती है। इस प्रकार हरियाणा की ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता राष्ट्रीय औसत से 16.26 प्रतिशत अधिक है। यह लैंगिक विषमता हरियाणा के विभिन्न जिलों में एक समान न होकर अलग–अलग है। अध्ययन–अध्यापन की सुविधा हेतु इन जिलों को तालिका 3.0 एवं मानचित्र 2.0 में 5 वर्गों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है–

तालिका 3.0
हरियाणा में ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

क्रमांक	लैंगिक विषमता (प्रतिशत में)	जिलों की संख्या
1	> 70.00	02
2	60.10–70.00	01
3	50.10–60.00	09
4	40.10–50.00	03
5	< 40.10	06

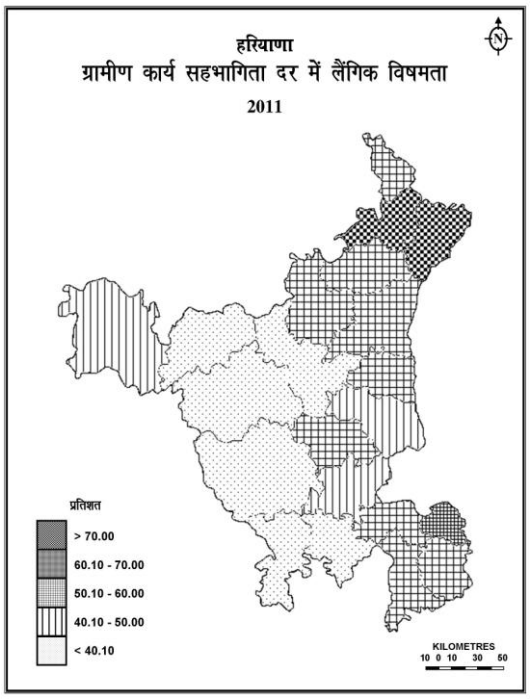

मानचित्र : 2.0

1. अत्यधिक ग्रामीण लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (70.00 प्रतिशत से अधिक)

तालिका 3.0 एवं मानचित्र 2.0 को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले दोनों जिले यमुनानगर (77.10 प्रतिशत) एवं अम्बाला (76. 84 प्रतिशत) राज्य के उत्तर–पूर्व क्षेत्र से सम्बन्धित हैं।

2. अधिक ग्रामीण लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (60.10 से 70.00 प्रतिशत)

इस वर्ग के अन्तर्गत हरियाणा का केवल फरीदाबाद जिला (64.38 प्रतिशत) सम्मिलित है। फरीदाबाद राज्य के दक्षिणी–पूर्वी भाग में स्थित है तथा साथ ही यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का हिस्सा भी है।

3.मध्यम ग्रामीण लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (50.10 से 60. 00 प्रतिशत)

इसके अन्तर्गत हरियाणा के उन 9 जिलों को सम्मिलित किया गया है जिसमें ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता 50.10 से 60.00 प्रतिशत के मध्य पायी गयी है। इसमें राज्य के उत्तर–पूर्व में 01 जिला पंचकुला (56.14 प्रतिशत); पूर्व में 2 जिले करनाल (57.68 प्रतिशत) व पानीपत (55.56 प्रतिशत); उत्तर में 2 जिले कुरुक्षेत्र (56.74 प्रतिशत) व कैथल (52.78 प्रतिशत); मध्य में 01 जिला रोहतक (51.96 प्रतिशत) तथा दक्षिण–पूर्व में 3 जिले गुड़गांव (53.64 प्रतिशत), पलवल (52.46 प्रतिशत) व मेवात (52.36 प्रतिशत) शामिल हैं।

4.अल्प ग्रामीण लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (40.10 से 50.00 प्रतिशत)

राज्य के जिल जिलों में ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में 40.10 से 50.00 प्रतिशत के मध्य लैंगिक विषमता पायी गयी है उन्हें इस वर्ग के अन्तर्गत रखा गया है। इस वर्ग के अन्तर्गत कुल 3 जिलों में से राज्य के पूर्व में 2 जिले झज्जर (48.64 प्रतिशत) व सोनीपत (44.63 प्रतिशत)

तथा उत्तर–पश्चिम में 01 जिला सिरसा (41.38 प्रतिशत) सम्मिलित है।

5.अत्यल्प ग्रामीण लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (40.10 प्रतिशत से कम)

इस वर्ग के अन्तर्गत हरियाणा के कुल 6 जिले सम्मिलित हैं। इसमें राज्य के उत्तर 01 जिला फतेहाबाद (37.56 प्रतिशत); उत्तर–मध्य में 01 जिला जीन्द (34.54 प्रतिशत); पश्चिम में 2 जिले भिवानी (32.60 प्रतिशत) व हिसार (32.54 प्रतिशत); दक्षिण में 01 जिला रेवारी (30.26 प्रतिशत) तथा दक्षिण–पश्चिम में 01 जिला महेन्द्रगढ़ (33. 40 प्रतिशत) शामिल है।

इस प्रकार हरियाणा राज्य में ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में सर्वाधिक लैंगिक विषमता यमुनानगर जिले में एवं न्यूनतम लैंगिक विषमता रेवारी जिले में पायी गयी है।

नगरीय कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

राज्य में जिस प्रकार कुल एवं ग्रामीण कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता पायी गयी है उसी प्रकार नगरीय क्षेत्रों में भी लैंगिक विषमता पायी जाती है। हरियाणा में नगरीय कार्य सहभागिता दर में 65.74 प्रतिशत की लैंगिक विषमता पायी गयी है जो राज्य के कुल औसत से 13.06 प्रतिशत अधिक एवं राज्य के ग्रामीण औसत से 19.40 प्रतिशत अधिक है जबकि भारत की नगरीय कार्य सहभागिता दर में 57.80 प्रतिशत की लैंगिक विषमता मिलती है। इस प्रकार हरियाणा की नगरीय कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता राष्ट्रीय औसत से 7.86 प्रतिशत अधिक है। नगरीय क्षेत्रों में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता का अध्ययन तालिका 4.0 एवं मानचित्र 3.0 की की सहायता से किया गया है जो इस प्रकार है–

तालिका 4.0
हरियाणा में नगरीय कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता, 2011

क्रमांक	लैंगिक विषमता (प्रतिशत में)	जिलों की संख्या
1	> 72.00	04
2	68.10–72.00	07
3	64.10–68.00	05
4	60.10–64.00	04
5	< 60.10	01

1.अत्यधिक नगरीय लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (72.00 प्रतिशत से अधिक)

तालिका 4.0 को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि इस वर्ग के अंतर्गत हरियाणा के कुल 4 जिले आते हैं। इसमें राज्य के दक्षिण में 2 जिले मेवात (76.32 प्रतिशत) व रेवारी (72.10 प्रतिशत); उत्तर–पूर्व में 01 जिला यमुनानगर (74.10 प्रतिशत) तथा उत्तर में 01 जिला कैथल (72.12 प्रतिशत) सम्मिलित है।

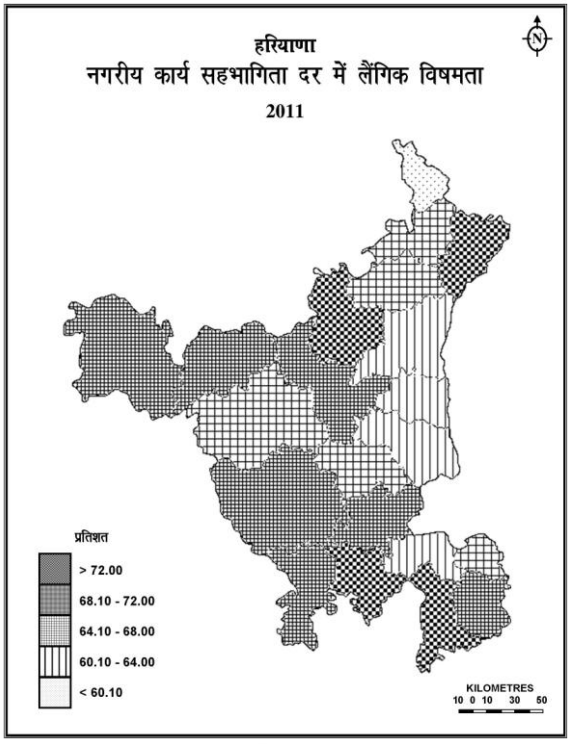

मानचित्र : 3.0

2.अधिक नगरीय लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (68.10 से 72. 00 प्रतिशत)

इस वर्ग के अंतर्गत राज्य के वे सर्वाधिक 7 जिले सम्मिलित हैं जिसमें कार्य सहभागिता दर में 68.10 से 72.00 प्रतिशत तक लैंगिक विषमता पायी गयी है। इसमें राज्य के उत्तर में 01 जिला फतेहाबाद (71.72 प्रतिशत); उत्तर–मध्य में 01 जिला जींद (69.26 प्रतिशत); उत्तर–पश्चिम में 01 जिला सिरसा (69.14 प्रतिशत); पश्चिम में 01 जिला भिवानी (69.04 प्रतिशत); मध्य–पूर्व में 01 जिला झज्जर (68.80 प्रतिशत); दक्षिण–पूर्व में 01 जिला पलवल (68.74 प्रतिशत) तथा दक्षिण–पश्चिम में 01 जिला महेंद्रगढ़ (68.30 प्रतिशत) शामिल है।

3.मध्यम नगरीय लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (64.10 से 68. 00 प्रतिशत)

हरियाणा राज्य में नगरीय कार्य सहभागिता दर में 64.10 से 68.00 प्रतिशत तक लैंगिक विषमता वाले कुल 5 जिले हैं। इसमें राज्य के उत्तर में 01 जिला कुरुक्षेत्र (67.06 प्रतिशत); उत्तर–पूर्व में 01 जिला अंबाला (66.72 प्रतिशत); मध्य में 01 जिला रोहतक (66.62 प्रतिशत); पश्चिम में 01 जिला हिसार (65.02 प्रतिशत) तथा दक्षिण–पूर्व में 01 जिला फरीदाबाद (64.74 प्रतिशत) शामिल है।

4.अल्प नगरीय लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (60.10 से 64.00 प्रतिशत)

तालिका 4.0 से स्पष्ट हो जाता है कि इस वर्ग में कुल 4 जिले सम्मिलित हैं। इसमें पूर्व में 3 जिले करनाल (63.94 प्रतिशत), पानीपत (63.94 प्रतिशत) व सोनीपत (61.98 प्रतिशत) तथा दक्षिण–पूर्व में 01 जिला गुड़गांव (60.88 प्रतिशत) शामिल है।

5. अत्यल्प नगरीय लैंगिक विषमता वाले क्षेत्र (60.10 प्रतिशत से कम)

इस वर्ग के अंतर्गत राज्य के उत्तर–पूर्व में स्थित केवल पंचकुला जिला ही शामिल है जिसमें लैंगिक विषमता 55.72 प्रतिशत पायी गयी ळें

इस प्रकार राज्य में नगरीय कार्य सहभागिता दर में सर्वाधिक लैंगिक विषमता मेवात जिले में एवं न्यूनतम लैंगिक विषमता पंचकुला जिले में पायी गयी है।

कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता के कारण

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि राज्य जहां एक ओर आर्थिक व राजनीतिक प्रगति की ओर अग्रसर है वहीं दूसरी ओर इसकी कुल, ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता अपनी चरम सीमा पर है। अर्थात् राज्य में कार्य सहभागिता दर में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या काफी कम पायी गयी है जिसका प्रमुख कारण पुरुषों की तुलना में स्त्रियों में साक्षरता दर कम होना व राज्य में लिंगानुपात कम होना है और अधिकांश महिलाएं घरेलू कार्यों जैसे– खाना पकाने, साफ–सफाई करने, बच्चों का पालन–पोषण करने एवं परिवार के सदस्यों की देख–रेख करने आदि में संलग्न रहती हैं जिन्हें आर्थिक क्रिया नहीं माना जाता है। अधिकांश घरों में अभी भी महिलाओं को घर से बाहर जाकर कार्य करने या नौकरी करने को अच्छा नहीं माना जाता है।

इसके साथ ही महिलाएं सामुदायिक, सामाजिक एवं निजी सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं। बिजली, गैस और पानी जैसे क्षेत्रों में स्त्रियों को बहुत ही कम रोजगार मिला है तथा साथ ही स्त्रियों को हमेशा ठेकेदार व जमींदार द्वारा शोषण एवं शारीरिक दुर्व्यवहार किए जाने का डर बना रहता है। यही सब कारण है कि लैंगिक दृष्टि से स्त्रियों की सहभागिता दर पुरुषों की अपेक्षा कम है।

सुझाव एवं निष्कर्ष

अतः राज्य में कार्य सहभागिता दर में लैंगिक विषमता जैसे अभिशाप को कम अथवा समाप्त करने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक व राज्य स्तर पर संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है जिसके अंतर्गत समाजीकरण की प्रक्रिया को परिवर्तित करने, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्थाओं, श्रम संगठनों व पेशेवर संगठनों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने, शिक्षा व स्वास्थ्य तक महिलाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के साथ ही पुरुषों की मानसिकता में बदलाव लानी होगी। इससे कार्य सहभागिता दर में महिलाओं की बढ़ोत्तरी होगी और राज्य के विकास को गति मिल सकेगी क्योंकि समानता एक सुंदर एवं सुरक्षित समाज की वह नींव है जिस पर विकासरूपी इमारत का निर्माण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Anjum, Saba (2007) : Women Workers in Informal in Aligarh City, Unpublished Ph.D. Thesis, A.M.U. Aligarh.*
2. *Census of India (2011) : Administrative Atlas, Haryana.*
3. *Census of India (2011) : Primary Census Abstract Directorate of Census Operations, Haryana.*
4. *Gosal, G.S. and Gopal Krishan (1965) : Occupational Structure of Punjab's Rural Population, 1962, Indian Geographical Journal, 40.*
5. *Monalisa, Smt. (2009) : Occupational Structure of Population of Jamui District of Bihar : A Geographical Study Paper Presented at the International Seminar held at A.M.U., Aligarh.*
6. *सिंह, ए. (2002) : भारतीय महानगरों में आर्थिक कार्यों में स्त्री सहभागिता के परिवर्तनशील आयाम : लखनऊ महानगर का एक प्रतीक अध्ययन, पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, अवध वि0वि0 अयोध्या.*
7. *विजय प्रकाश (2011) : हरियाणा की व्यावसायिक संरचना में लैंगिक विषमताओं का प्रादेशिक विश्लेषण, पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, 190–207.*
8. *Verma, D.C. : Haryana, National Book Trust, India, New Delhi, 1975, 45-47.*
9. *Verma, D.N. and etc. (2010) : The Transactions of the Institute of Geographers, India, 47-54.*